International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.4 No.31 July-Aug 2023

स्वामी विवेकानंद का नव वेदांतवाद

कविता वर्मा
सहायक आचार्य(इतिहास)
M.S.J Govt. P.G. College Bharatpur, Rajasthan
Corresponding Author: कविता वर्मा
Kavitasoni694@gmail.com

संक्षेपिका -: स्वामी विवेकानंद ने नव वेदांतवाद का प्रतिपादन किया, उन्होंने भारत के सभी पवित्र ग्रंथों का अध्ययन किया-शंकराचार्य के ज्ञान दर्शन, उपनिषदों, गीता, बुद्ध के निहित ज्ञान आदि सभी के तार्किक एवं विवेकपूर्ण अध्ययन से समाज के लिए एक दृष्टिकोण विकसित किया। विवेकानंद ने अपनी आत्मा को जान लेने के आद्यात्मिक सिद्धान का प्रतिपादन किया, यही है सम्पूर्ण मानवता का अध्यात्मकरण। उनका विचार था कि ब्राह्मण में व्याप्त तीन शक्तियों या गुणों ,सत, रज और तम का मनुष्य स्वयं भी प्रतिबिंब है, और यही सत-चित और आनंद की भी अवस्था है। विवेकानंद का यह नव वेदांतवाद सिर्फ सिद्धांत मात्र नहीं बल्कि पूर्ण व्यवहारिक है, अपने नव वेदांत दर्शन में विवेकानंद ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि मनुष्य को व्यवहारिक जीवन में किस प्रकार वेदांत की शिक्षा दी जा सकती है। यह नव वेदांत का विचार विविधता में एकता की भावना बनाने का एक सटीक तरीका प्रदान करता है। वर्तमान परिपेक्ष्य में स्वामी विवेकानंद के नव- वेदांतवाद के महत्व को हम अनदेखा नहीं कर सकते क्योंकि इसका प्रयोग हमारे समाज और रोजमर्रा के जीवन हेतु अति मत्त्वपूर्ण है। वर्तमान समय में नैतिकता की कमी हमारे पूरे समाज में मौजूद है, जिसे नव-वेदांतवाद द्वारा ही दूर किया जा सकता है।

स्वामी विवेकानंद के दर्शन की सबसे प्रमुख बात यह है कि यह आद्यात्मिक, व्यवहारिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का एक अद्भुत संगम है, यह सिर्फ ज्ञानात्मक पक्ष तक ही सीमित नहीं बल्कि पूर्ण व्यवहारिक है, और इसी नातेयह वर्तमान परिपेक्ष्य में और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।

स्वामी विवेकानंद ने वेदांत के शाश्वत मूल्यों एवं दर्शन के गंभीर तत्वों को सिद्धांत तथा आदर्शों से आगे बढ़ाकर व्यवहारिक रूप देने तथा समाज के प्रत्येक स्तर तक उसे पहुँचाने का सफल प्रयास किया। उनका विचार था कि साधारणत: समाज में रह कर मनुष्य को अपनी इच्छाओं, भावनाओं, उद्देश्यों के माध्यम से कर्म करने की आदत पड़ जाती है, लेकिन जब मनुष्य भावनाओं, इच्छाओं के वशीभूत कार्य करता है, तब वह अपनी शक्ति का दुरुपयोग ही करता है तथा अपने मस्तिष्क को भी विकृत कर डालता है, और मनुष्य की शक्ति जिसको की कार्यरूप में परिणित होना था वह व्यर्थ रूप में ही क्षय हो जाती है, जब मन शांत होता है,तब एकाग्र हो पाता है और तभी हमारी शक्ति सत्कार्य में पूर्ण प्रयोग हो पाती है।

स्वामी विवेकानंद के नव- वेदांतवाद का आधार वेदांत दर्शन ही था , परंतु स्वामीजी ने शंकराचार्य के वेदांत दर्शन के साथ अन्य धर्म, दर्शन व आध्यात्मिक विचारों पर भी विमर्श किया, इस प्रकार नव- वेदांतवाद सिर्फ अन्य जटिल सिद्धान्तों की भांति सीमित नहीं रहा बल्कि यह इतना व्यवहारिक बनाया गया ताकि समाज के हर कोने- कोने तक यह पहुंच सके तथा व्यवहार में अपनाया जा सके। विवेकानंद ने कहा कि प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवन के प्रत्येक कार्य में पवित्रता, निश्छलता, निष्कपटता, स्वार्थहीनता, सत्यता आदि सभी गुणों को समाहित करना चाहिए, उनका विचार था कि सिर्फ ईश्वर प्राप्ति महत्वपूर्ण नहीं बल्कि महत्वपूर्ण है मानवीयता को ग्रहण करना, अपनाना, व्यवहार में लाना और आदत में समाहित करना।

विवेकानंद ने वेदांत दर्शन की विस्तृत व्याख्या की, और कहा कि वेदांत एक प्रकार का जीवन दर्शन है। वेदांत की दार्शनिक धरोहर को एक मात्र पूर्ण मानते हुए विवेकानंद ने इसके अत्यधिक महत्वपूर्ण और प्रगतिशील तत्त्वों को अलग करने के कार्य मे स्वयं को लगाया ताकि उसके आधार पर एक नवीन वेदांत बनाया जा सके।

स्वामीजी नव-वेदांतवाद के ज्ञान और उसकी व्यवहारिकता में शिक्षा को बहुत महत्वपूर्ण कारक मानते हैं, क्योंकि शिक्षा ही वह माध्यम है जो मानव के ज्ञान का अग्रिम पीढ़ी में संप्रेषण करता है, समस्त वैदिक साहित्य में विद्या एवं अविद्या के भेद को विशिष्ट रूप में रेखांकित किया गया है, तदानुसार विद्या वह है, जो मुक्ति का साधन है- सं विद्या या विमुक्तये। इसके विपरीत जो मुक्ति के लिए न होकर बंधनकारी हो वह अविद्या है। शिक्षा का उद्देश्य है व्यक्ति के व्यक्तित्व को विकसित करना अर्थात मानव में मानवता का आधान करना ताकि मानव समस्त सृष्टि में निकृष्टतम न होकर उत्कृष्टम बन सके। परंतु वर्तमान शिक्षा अपने आध्यात्मिक उद्देश्यों से बहुत विचलित हो चली है, स्वामीजी का कहना था कि जो शिक्षा व्यक्ति को जीवन संग्राम में समर्थ नहीं बना सकती , जो मनुष्य में चरित्र बल, परहित भावना तथा सिंह तुल्य साहस नहीं जगा सकती वह शिक्षा नहीं है, हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जिससे चरित्र निर्माण हो, मानसिक शक्ति बढ़े, बुद्धि विकसित हो और देश के युवक अपने पैरों पर खड़ा होना सीख सकें। स्वामी विवेकानंद के अनुसार शिक्षा का अर्थ है उस पूर्णता की अभिव्यक्ति जो सभी मनुष्यों में पहले से ही विद्यमान हैं और इस दृष्टि से धर्म शिक्षा का अन्तरत अंग है, यहां 'धर्म' से स्वामी जी का आशय किसी दूसरे की धारणा नहीं है बल्कि मानव मात्र की सृष्टि के अनुकूल योग्यतम नियमावली है। संसार इंद्रियों, बुद्धि और युक्ति सभी की ओर से अनंत, अज्ञेय और अज्ञात से परिसीमित है, यह अनंतता ही हमारी खोज है। स्वामी विवेकानंद के अनुसार धर्म कहीं बाहर से नहीं आता बल्कि व्यक्ति के अभ्यंतर से ही उदित होता है, मनुष्य चाह कर भी धर्म का त्याग नहीं कर सकता। स्वामीजी का स्पष्ट निर्देश था कि शिक्षा में धर्म का समावेश अवश्य होना चाहिए। उनका यह धर्म ईश्वर में विश्वास की अपेक्षा स्वयं में विश्वास है तथा इस विश्वास का अर्थ मात्र स्वयं में विश्वास तक ही सीमित नहीं बल्कि यह सब के प्रति विश्वास है क्योंकि व्यक्ति सर्वस्वरूप है, और यही आत्मविश्वास है जो मानव की सबसे बड़ी शक्ति है यही नव- धर्म है, इसी धर्म के द्वारा हम अपने हृदय को सुसंस्कृत बना सकते हैं और यही शिक्षा का भी उद्देश्य है, अतः शिक्षा में धर्म का सन्निवेश अनिवार्य है।

स्वामी जी के अनुसार शिक्षा के नव-वेदांती स्वरूप को पुनः अपनाने के बाद हम एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था का निर्माण कर सकते हैं जिससे विश्व में व्याप्त अनेकानेक समस्याओं का समावेश स्वमेव ही हो जाएगा।

नव्य- वेदांत शिक्षा दर्शन तथा नव-जीवन में आध्यात्मिक दृष्टकोण और उसके व्यवहारिक पक्ष का आध्यात्मिक महत्त्व है, वह आत्मा की सत्ता को महत्वपूर्ण तत्व के रूप में मानते हैं, अतः उनके दर्शन में समस्त प्रयास आत्मा को लक्ष्य में रख कर किए गए हैं।

नव्य-वेदांत शिक्षा दर्शन में जीवन लक्ष्यों से शिक्षा उद्देश्यों की उद्भावना हुई है उनकी शिक्षा में ब्रह्म साक्षात्कार का सर्वोच्च लक्ष्य स्वीकार किया गया है। उनके अनुसार समस्त शिक्षा का सार ब्रह्म ज्ञान में ही है। ब्रह्म जीवन का यथार्थ एवं परिपूर्ण तथ्य है अतः शिक्षा का उद्देश्य इसी यथार्थ तथा परिपूर्ण तत्व का ज्ञान प्राप्त करना है। ब्रह्म ज्ञान का साक्षात्कार करने बाला व्यक्ति आत्मदृष्टा बन जाता है, और वह आत्मा और परमात्मा में भेद को नहीं देखता, उसके लिये आत्मा- परमात्मा एक ही हैं।

स्वामी विवेकानंद ने अपने क्रांतिकारी विचारों के माध्यम से भारत मे नवीन चेतना को जागृत करने का सफल प्रयास किया, उनका नव-वेदांतवाद जो कि वेदांत की नवीन व्याख्या है को स्वामीजी ने व्यवहारिक रूप में सर्वसाधारण तक पहुँचाया। स्वामीजी ने किसी नवीन धर्म की स्थापना नहीं कि और न ही धर्म को किसी सीमा में सीमित करने का प्रयास किया बल्कि उन्होंने धर्म की अभिव्यक्ति को एक ऐसी वाणी प्रदान की जिससे वह विभिन्न मान्यताओं के मध्य अपनी पहचान को स्थापित कर सर्वोच्च पर विराजमान है।

सम्पूर्ण विवेचन के आधार पर स्पष्ट होता है कि स्वामी विवेकानंद ने अद्वेत वेदांत को एक यथार्थ तथा समयानुकूल रूप में प्रस्तुत कर जन-जन तक इसके प्रसार तथा इसको वास्तविक जीवन मे अपनाए जाने पर महत्वपूर्ण योगदान कर के वेदांत दर्शन के सैद्धान्तिक स्वरूप को व्यवहारिक रूप में प्रस्तुत किया। स्वामी जी ने कहा कि यह तभी संभव है जब प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन के प्रत्येक कार्य में पवित्रता, निश्चलता, निष्कपटता, सत्यता, स्वार्थहीनता आदि समस्त गुणों को प्रत्येक स्तर पर समाहित करे।

इस प्रकार आधुनिक समय में स्वामी विवेकानंद के नव- वेदांतवाद की प्रासंगिकता को अनदेखा कदापि नहीं किया जा सकता। उनके अनुसार हमारे राष्ट्र के प्रत्येक युवा को जाग कर तब तक नहीं रुकना चाहिए जब तक वह अपने लक्ष्य तक न पहुँच जाए तथा समाज को उसके लक्ष्य तक पहुँचाने में सहयोगी हो, और इस लक्ष्य की प्राप्ति का व्यवहारिक साधन ही स्वामी विवेकानंद का नव- वेदांतवाद का सिद्धांत है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची-

1. Dasgupta S.N (2018)- A History of Indian Philosophy. Vol 1
2. Sharma, Dr. Chandradhar (1987)- A critical survey of Indian Philosophy.
3. Modern India- Udbodhan, mar (1899)

4. दुवे, श्यामा, ' मानव और संस्कृति' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. स्वामी विवेकानंद, 'शिक्षा' रामकृष्ण मठ- नागपुर 1985।
6. स्वामी विवेकानंद,'मेरा जीवन, मेरा ध्येय' रामकृष्ण मठ- नागपुर 1991
7. स्वामी विवेकानंद, ' वेदांत' रामकृष्ण मठ- नई दिल्ली 2003
8. डॉ. जे. पी सिंह, आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन।
9. बुद्ध प्रकाशन,' भारतीय धर्म और संस्कृति' मीनाक्षी प्रेस, मेरठ
10. स्वामी विवेकानंद, 'भारत का भविष्य' रामकृष्ण मठ - नागपुर 1991
11. गीता शंकर भाष्य, 'हिंदी अनुवाद' गीता प्रेस, गोरखपुर 1988